खेती री बातां

वर्ष–15 अंक–9 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 सितम्बर 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

प्रदेश में "मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना" का शुभारम्भ

जयपुर, 13 अगस्त। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने पशुपालन विभाग के परिसर में बड़ी संख्या में मौजूद किसानों एवं पशुपालकों के बीच 13 अगस्त को ''मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना'' का शुभारम्भ करते हुए घोषणा की कि यह योजना 15 अगस्त से पूरे प्रदेश में लागू होगी। श्री गहलोत ने कहा कि पशुपालन हमारी अर्थव्यवस्था का सशक्त आधार है तथा प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन व्यवसाय का योगदान 8 प्रतिशत है। श्री गहलोत ने कहा कि सभी पशुओं को सरकारी चिकित्सालयों में मुफ्त दवा मिलने पर पशुपालकों को राहत मिलेगी। इस योजना के तहत सर्वाधिक उपयोग में आने वाली 87 प्रकार की जैनरिक एवं 13 सर्जिकल दवाईयाँ निःशुल्क पशुपालकों को उपलब्ध कराई जायेंगी। उन्होंने कहा कि हमारे राज्य के उन्नत नस्ल के पशुधन की देशभर में पहचान है और देश के 11 प्रतिशत पशुधन हमारे यहां हैं। देश का 13 प्रतिशत दूध तथा 30 प्रतिशत ऊन का उत्पादन राजस्थान में होता है। मुख्यमंत्री ने पशुपालन विभाग के अधिकारियों से कहा कि ''मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना'' गांव–गांव तक पहुँचाऐं और दवा की माकूल व्यवस्था करें। श्री गहलोत ने कहा कि सरकार इस योजना के लिए धन की कोई कमी नहीं आने देगी। शेष पृष्ठ 4 पर .....

राजस्थान निरन्तर विकास की ओर अग्रसर

जयपुर, 15 अगस्त। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में झण्डारोहण के बाद जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आजादी के बाद राजस्थान अपनी कठिन भौगोलिक स्थितियों के बावजूद निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है और राज्य सरकार आमजन को पानी, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, आवास, रोजगार आदि बुनियादी जरूरतें मुहैया कराने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों की हितैषी है, सरकार ने बिजली की दरों में पाँच साल तक कोई बढ़ोतरी नहीं करने का ऐतिहासिक फैसला किया है। कृषि बीमा योजना और मौसम आधारित फसल बीमा योजना के तहत 83 लाख से अधिक किसानों को लगभग 2740 करोड़ रूपये फसल बीमा राशि का भुगतान किया है।

राजस्थान उत्तर भारत का पहला राज्य है जिसने समय पर फसली ऋण चुकाने वाले किसानों का पूरा ब्याज राजकोष से देने का महत्वपूण निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि गत वर्ष राजस्थान को दलहनी फसलों के रिकार्ड उत्पादन के लिए कृषि कर्मण पुरस्कार दिया गया।

वर्ष 2010–11 में राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 10.97 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी हुई। तेजी से सकल घरेलू शेष पृष्ठ 3 पर .....

किसान जैविक खेती को अपना कर अच्छी गुणवत्ता युक्त पैदावार प्राप्त करें

जयपुर, 17 अगस्त। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़कर ने नागौर जिले के लाडनूं तहसील क्षेत्र के ग्राम सुनारी में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत आयोजित जैविक खेती प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि किसान जैविक खेती को अपनाकर अच्छी गुणवत्तायुक्त पैदावार प्राप्त करें। जैविक खेती से पर्यावरण सुरक्षा के साथ–साथ कीटनाशक रसायनों के प्रयोग से होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकता है।

कृषि मंत्री ने कहा कि किसान कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों का चयन कर बुवाई करें तथा परम्परागत खेती की जगह अब वैज्ञानिक तकनीक पर आधारित खेती को अपनायें। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे बूंद–बूंद सिंचाई को अपनायें। उन्होंने बागवानी खेती पर विशेष जोर देते हुए कहा कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के माध्यम से किसान भाई अनुदान का लाभ प्राप्त करें।श्री बुरड़क ने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत प्याज भण्डारण संरचना, सामुदायिक जलस्त्रोत निर्माण तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत जैविक खेती प्रोत्साहन राशि के तहत 190 किसानों को 66 लाख रूपये की अनुदान राशि के चैक वितरित कर लाभान्वित किया।

गेहूँ एवं जौ की उन्नत किस्मों के लिए अनुसंधान की आवश्यकता

जयपुर 25 अगस्त। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''गेहूँ एवं जौ सुधार परियोजना'' कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा है कि प्रदेश व देश के कृषि वैज्ञानिकों को गेहूँ एवं जौ की उन्नत फसल के लिए शोध करने की निरतंर आवश्यकता है ताकि खेती किसानों के विकास के लिए वरदान साबित हो सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कृषि वैज्ञानिकों को मौसम आधारित पैदावार को बढ़ावा देने के साथ पाला एवं सर्दी के बचाव के मौसम आधारित बीज तैयार करने की आवश्यकता पर बल देने की जरुरत है। देश के कृषि वैज्ञानिकों ने इस प्रकार सक्षमता विकसित की है जिससे हम अन्य देशों को खाद्यान्न निर्यात करने की स्थिति में आ गये हैं, यह वैज्ञानिकों की सराहनीय उपलब्धि है। श्री बुरड़क ने कहा कि वर्तमान समय में कृषि वैज्ञानिकों को क्षारीय भूमि, खारे पानी की भूमि, जलवायु परिवर्तन के साथ कम पानी से होने वाली खेती की विधि पर शोध करने की और आवश्यकता है।

कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के पूर्व महा निदेशक डॉ0 आर.एस.परोदा, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ0 एस.के.दाहमा सहित अन्य कृषि वैज्ञानिक भी उपस्थित थे।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

★ इस माह के कृषि कार्य .....
★ गुणी कमला .....
पृष्ठ 2

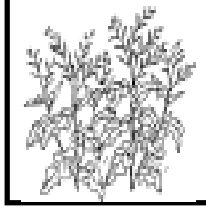

★ उन्नत तकनीक अपनायें, सरसों की .....
★ गुणों का खजाना है–जिप्सम.....
★ फड़का कीट .....
★ परख .....
पृष्ठ 3

★ खरीफ की दलहनी फसलों में .....
★ पारम्परिक खेती से वैज्ञानिक खेती .....
पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★ तिल में छाछ्या रोग नियन्त्रण हेतु 20 किलो गन्धक का चूर्ण प्रति हैक्टर भुरकें।

★ तारामीरा की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूम्बर तक करें। इसकी उन्नत किस्म टी–27, आई.टी. एस.ए. एवं आर.टी.एम.–314 का प्रयोग करें। बीज को 2 ग्राम मैन्कोजेब या 2 ग्राम कार्बेण्डेजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें। एक हैक्टर के लिए 5 किग्रा. बीज पर्याप्त रहेगा।

★ तोरिया की बुवाई सितम्बर माह में करें। इसकी टी–9, टी.एल. 15, भवानी व संगम किस्में बुवाई के लिए उपयुक्त हैं। प्रति हैक्टर 5 किलो बीज को 12.5 ग्राम मैन्कोजेब या 10 ग्राम कार्बेण्डेजिम से उपचारित कर बोयें।

★ कुसुम की बुवाई 15 सितम्बर से अक्टूबर तक कर सकते हैं। कुसुम की जे.एस.एफ–1, एन. 62–8 तथा भीमा कांटेदार किस्में व जे.एस.एफ–5 बिना कांटेदार किस्म है। बीज की मात्रा 15–20 किलो प्रति हैक्टर रखें।

★ सोयाबीन में फूल आने पर डाईमिथोएट 30 ई.सी. का एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से 400 से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

छिड़काव को 15–20 दिन बाद पुनः दोहराएं।

★ रबी फसलों सरसों, चना के लिए वर्षा जल, नमी संरक्षण का कार्य करें।

बागवानी

★ पपीते की फसल में पर्ण कुचन एवं मोजेक रोग की रोकथाम हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देवें तथा रोग के प्रसार को रोकने के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. दवा का एक मिली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ आम में माथा बंधना या कुरचना रोग (माल फॉरमेशन) के प्रकोपित पौधों से रोगी भाग को काटकर नष्ट कर देना चाहिये एवं इन पौधों पर नेपथलिन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) का 1 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ नींबू के पौधों में कैन्कर रोग के नियंत्रण हेतु रोगग्रस्त पत्तियों और टहनियों को काटकर नष्ट कर देवें तथा बोर्डो मिक्श्चर (4:4:50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 250 मिलीग्राम एवं बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का 20 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

सब्जियाँ

★ फूलगोभी व पत्ता गोभी की पौध रोपाई से पूर्व खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टर 100 ग्राम ऑक्सीफ्ल्यूरेफेन दवा छिड़क कर भूमि में मिलायें। तत्पश्चात् पौधों की रोपाई कतार से कतार की दूरी 60 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखते हुए करें।

★ मटर की अर्किल, हरा बोना, जवाहर मटर–4, आजाद पी–1 आदि उन्नत किस्मों की बुवाई करें। प्रति हैक्टर 80–100 किलो बीज काम में लेवें। फसल को जड़गलन रोग से बचाने हेतु बीजों को बुवाई से पूर्व थाइरम या मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

★ मूली की जापानीज व्हाईट किस्म की बुवाई करें। इसकी बीज दर 10–12 किलो प्रति हैक्टर रखें। कतारों एवं पौधों के बीच 30 X 10 सेमी की दूरी रखें।

पुष्पोत्पादन

★ ग्लेडियोलस के 4–5 सेमी व्यास आकार के कन्दों की 30 सेमी की दूरी पर कतारों में एवं पौधों की दूरी 20 सेमी रखते हुए रोपाई करें।

★ रजनीगंधा के स्पाइक की कटाई–छंटाई एवं विपणन करें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

★ पशुओं में एच.एस. एवं बी.क्यू. का टीका लगवायें।

★ खुरपका–मुँहपका रोग की रोकथाम के लिए टीका लगवायें।

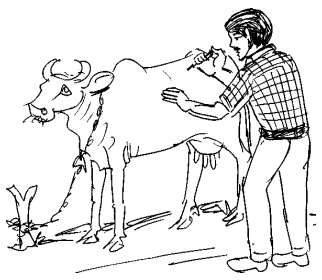

इस रोग से ग्रसित पशुओं के घाव को पोटेशियम परमैंग्नेट (लाल दवा) से धोएं।

★ सभी पशुओं को पेट के कीड़े मारने की दवा पिलावें।

★ गन्दे पोखर तथा तालाब में पशुओं को न जाने दें। स्वच्छ पानी ही पिलायें। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु पशु, स्वयं, दूध के बर्तन आदि की सफाई का ध्यान रखें।

उन्नत तकनीक अपनायें, सरसों की उत्पादकता बढ़ायें

सरसों राज्य में उगाई जाने वाली रबी की प्रमुख तिलहनी फसल है। इसकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रमाणित बीज को उपचारित कर बोयें, खाद व उर्वरक के अलावा बुवाई से पहले जिप्सम डालें व क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई करें। समय पर कीट व रोग से बचाव के उपाय भी अपनायें।

उत्पादकता में बढ़ोतरी के मुख्य उपाय :–

★सरसों की पैदावार पर बुवाई के समय का अत्याधिक प्रभाव पड़ता है। अतः 15 सितम्बर से 25 अक्टूबर तक बुवाई कर दें।

★सिफारिश की गई उन्नत किस्में पूसा जय किसान (बायो–902), रजत (पी.सी.आर–7), आर.एच. 30, पूसा बोल्ड, लक्ष्मी, अरावली (आइ. एन. 393), आर.एन. 505, टी–59, आशीर्वाद, आर.जी.एन. 48, आर. जी.एन.–145, आर.जी.एन.73, आर. जी.एन.–13 आदि बोयें।

★सफेद रोली रोग से बचाव हेतु प्रति किलो बीज को एप्रोन 35 एस.डी. (मेटेलेक्सिल) दवा की 6 ग्राम मात्रा से उपचारित करें। रोग होने पर मैनकोजेब या कॉपर ऑक्सिक्लोराईड 1.5 से 2 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें एवं आवश्यकता होने पर 20 दिन बाद पुनः दोहराएं।

★बीज को पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित करें। इससे पौधों में

फॉसफोरस की उपलब्धता बढ़ती है।

★उर्वरकों का उपयोग मिट्टी की जाँच रिपोर्ट के आधार पर ही करें। सिंचित फसल में अधिकतम उपज लेने हेतु 80 किग्रा. नत्रजन तथा 40 किग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टर के आधार पर डी.ए.पी. 88 किग्रा व 145 किग्रा. यूरिया अथवा 250 किग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट व 175 किग्रा. यूरिया काम में लेवें तथा बुवाई से पूर्व 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर अर्थात् 25 किलो प्रति कच्ची बीघा प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा व फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई से पूर्व ऊरकर देवें तथा शेष नत्रजन की मात्रा पहली सिंचाई के साथ देवें। असिंचित क्षेत्र में ऊपर बताये गये उर्वरकों की आधी मात्रा ही बुवाई से पूर्व काम में लेवें।

★पौधों का विरलीकरण (छंटाई) बुवाई के 25–30 दिन के मध्य अवश्य करें।

★फसल की तीन पत्ती अवस्था में पेन्टेड बग व आरा मक्खी से बचाने के लिए मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण अथवा क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 20–25 किग्रा. प्रति हैक्टर की दर से भुरकें।

★मोयला कीट दिखाई देने पर मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत या मैलाथियॉन 5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किग्रा. प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें अथवा डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा का 875 मिली. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

★बुवाई के 45 दिन व 65 दिन की अवस्था पर एक लीटर पानी में आधा ग्राम थायोयूरिया का घोल बनाकर छिड़काव करें। इससे पाले से बचाव होता है व 10–15 प्रतिशत तक उपज बढ़ती है।

गुणों का खजाना है - जिप्सम

राज्य में कृषकों द्वारा प्रायः गंधक रहित उर्वरक जैसे डी.ए.पी. एवं यूरिया का अधिक उपयोग किया जा रहा है तथा गंधक युक्त सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग कम हो रहा है।

तिलहनी फसलों में गंधक के उपयोग से दानों में तेल की मात्रा में बढ़ोतरी होती है साथ ही दानें सुड़ौल व चमकीले बनते हैं। इससे पैदावार अधिक प्राप्त होती है, साथ ही भूमि सुधार भी होता है। जिप्सम गंधक का सर्वोत्तम व सस्ता साधन है। इसमें लगभग 13–16 प्रतिशत गंधक तथा 16–19 प्रतिशत कैल्शियम पाया जाता है। इसी प्रकार दलहनी फसलों में जिप्सम के उपयोग से दानें सुड़ौल बनते हैं व पैदावार बढ़ती है। यह पौधों की जड़ों में स्थित राइजोबियम जीवाणु की क्रियाशीलता को बढ़ाता है जिससे पौधे वातावरण में उपस्थित नत्रजन का अधिक से अधिक उपयोग कर सकते हैं। प्रोटीन के निर्माण के लिए गंधक अति आवश्यक पोषक तत्व है। सरसों व चना में अच्छी गुणवत्ता की अधिक उपज लेने के लिए 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर बुवाई से पहले खेत में मिलायें। जिन फसलों में जिप्सम का उपयोग किया जाता है उनमें पाले से नुकसान होने की संभावना कम रहती है।

राज्य सरकार किसानों के लिए 700 रूपये प्रति मैट्रिक टन की अनुदानित दर पर जिप्सम उपलब्ध करवा रही है। कृषक जिप्सम की उपलब्धता के लिए अपने क्षेत्र के कृषि पर्यवेक्षक या निकटतम कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें।

फसलों को फड़का कीट से बचाएं

किसान भाइयों खरीफ फसलों को फड़का कीट से बचाने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाएं–

फड़का शिशु कीट नियंत्रण

● फड़का शिशु कीट पंख रहित होते हैं, इसलिए खेत में जगह–जगह 30–45 सेन्टीमीटर चौड़ी व 60 सेन्टीमीटर गहरी खाईयाँ खोद कर इन्हें नियन्त्रित किया जा सकता है।

● प्रारम्भिक अवस्था में यह मेड़ से उगे खरपतवारों पर फैलता है। अतः खरपतवारों पर ही कीटनाशी रसायन का भुरकाव करें।

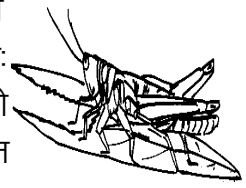

● खेतों में मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण में से किसी एक रसायन का 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें। भुरकाव डस्टर से ही करना चाहिये।

फड़का प्रौढ़ कीट नियंत्रण

● अपने खेतों में प्रकाशपाश, बिजली का बल्ब या पैट्रोमैक्स लैम्प या लालटेन जलायें व इसके नीचे मिट्टी का तेल मिला पानी परात में भरें। रात के समय प्रकाश से आकर्षित होकर आने वाले कीट इस पानी में गिरकर मर जायेंगे।

● खेतों की मेड़ों पर घास–फूस, कचरा, लकड़ी आदि भी रात को 8 से 11 बजे तक जलायें। इनके प्रकाश से आकर्षित होकर उड़कर आने वाले कीट जलकर मर जायेंगे।

परख

अगस्त, 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले कृषकों में से लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री रमेश**
   पुत्र श्री लोभजी जाट,
   ग्रा0 पो0–लाखोला,
   वाया– गंगापुर,
   जिला–भीलवाड़ा (राज.)
2. **श्री लीलाराम**
   पुत्र श्री गणेशरामजी रावल,
   अम्बिका नोवेल्टी स्टोर,
   ग्रा0 पो0–जावाल,
   जिला–सिरोही– 307801

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 राज्य में ''मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना'' कब से लागू हुई ?

प्र.2 राज्य सरकार किसानों को किस अनुदानित दर पर जिप्सम उपलब्ध करवा रही है ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –

उप निदेशक कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

पृष्ठ 1 का शेष ..... राजस्थान निरन्तर .....

उत्पाद बढ़ने वाले देश के 5 राज्यों में राजस्थान भी शामिल हुआ।

राज्य सरकार ने आमजन को एक अगस्त, 2012 से 'सुनवाई का अधिकार' दिया गया है। प्रदेश में राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारन्टी अधिनियम–2011 लागू कर आठ महिनों में 58 लाख से अधिक मामलों का निस्तारण किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबों के घर का सपना साकार करने के लिए मुख्यमंत्री ग्रामीण बी.पी.एल. आवास योजना, तथा मुख्यमंत्री शहरी बी.पी. एल. आवास योजना लागू की। मुख्यमंत्री अन्न सुरक्षा योजना के तहत गरीब परिवारों को 2 रूपये प्रति किलोग्राम की दर से गेहूँ दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना प्रदेश में बहुत लोकप्रिय हुई है जिससे अब तक 5.75 करोड़ लाख रोगी लाभ उठा चुके हैं।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–

उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

खरीफ की दलहनी फसलों में फली छेदक कीट का नियंत्रण

- दलहनी फसलों मूंग, मोठ, चँवला में फूल आने की अवस्था (30–40 दिन) पर फली छेदक कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है।
- फसल की इस अवस्था पर फैरोमोन ट्रेप (5 ट्रेप प्रति हैक्टर) लगाायें।
- फैरोमोन ट्रेप में फली छेदक के 4–6 नर पतंगे पाये जाने पर नियंत्रण उपाय शुरू करें।
- समन्वित कीट नियंत्रण के लिए फसल में आर्थिक क्षति स्तर पर नीम आधारित कीटनाशी दवा अजाडिरेक्टिन 0.03 ई.सी. 1.5 लीटर/है. का छिड़काव करें।

दूसरा छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने पर अथवा 1–2 सूंडी प्रति पौधा दिखाई देनें पर न्यूक्लियर पोली हाइड्रोसिस वायरस (एन.पी.वी. 250.एल.ई.) 125 मिली लीटर प्रति हैक्टर पानी में घोल कर प्रातः या सायं कालीन छिड़काव करें।

- कीट का प्रकोप होने पर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.सी. 1 लीटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यू. पी. 500 ग्राम दवा का प्रति हैक्टर की दर से 400 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पारम्परिक खेती से वैज्ञानिक खेती की ओर बढ़ते कदम

(सफलता की कहानी– स्वयं कृषक की जुबानी)

प्रगतिशील कृषक श्री झाबर सिंह अहीर सीकर जिले के प्रीतमपुरी गांव में एक साधारण किसान के घर में जन्में, जहां पारम्परिक खेती ही होती थी। उन्होंने पारम्परिक खेती को सम्भालने एवं सामाजिक कार्यों का निर्वहन करने हेतु शिक्षक के पद पर नौकरी न कर घर पर रहकर खेती करने की जिम्मेदारी ली। आइये जानते हैं इस प्रगतिशील कृषक की सफलता की कहानी, स्वयं इन्हीं की जुबानी :– सर्वप्रथम मैंने वर्ष 1997 में पुरानी पद्धति से खेती करना चालू किया था और धीरे–धीरे गोबर की खाद को ढ़ेर की बजाय गडढ़ों से इकट्ठा कर सड़ाकर खेत में डालना शुरु किया। सड़ी–गली गोबर की खाद के साथ उर्वरक उपयोग, उन्नत बीज प्रयोग से खेती की पैदावर हर वर्ष बढ़ती गई जिससे मेरी लगन भी उन्नत खेती की ओर बढ़ती गई।

मैंने वर्ष 1987 मैं सर्वप्रथम गोबर गैस संयंत्र लगाया जिससे आम के आम और गुठली के दाम वाली कहावत चरितार्थ हुई। गैस खाना बनाने एवं सलेरी ने फसल, उद्यान एवं सब्जियों की पैदावार में चार चाँद लगाये, जिससे मेरा मनोबल बढ़ा। वर्ष 1992 में फव्वारा सिंचाई पद्धति को अपनाकर पानी की बचत का सपना साकार किया।

वर्ष 2000 में बूंद–बूंद सिंचाई योजना चालू कर आवंला दो हैक्टर, बेर एक हैक्टर, पपीता आधा हैक्टर व बील–पत्र चौथाई हैक्टर में लगाया, जिससे

पौधों में पानी की कमी नहीं आई और अच्छी पैदावार पाकर में पूर्णतया संतुष्ट हूँ।

वर्ष 2002 से दुग्ध उत्पादन हेतु मुर्रा भैंस एवं जर्सी व होलिस्टीन गायें खरीदी जिनसे देशी भैंसों एवं गायों की तुलना में ज्यादा दूध प्राप्त हो रहा है।

वर्ष 2004 में सुपर कम्पोस्ट पिट बनाकर कृषि वेस्ट, नीम के पत्ते, आक के पत्ते डालकर सुपर कम्पोस्ट तैयार कर पेड़ों, सब्जियों एवं फसलों में काम में ले रहा हूँ, जो बहुत की कारगर सिद्ध हो रहा है।

कृषि प्रौधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण (आत्मा) सीकर द्वारा आयोजित किसान मेला प्रदर्शनी 03 जनवरी 2012 को बील–पत्र प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम एवं आंवला प्रतियोगिता में भाग लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इस समय मै आंवला से 2,50,000 रूपये, नींबू व बीलपत्र से 50,000 रूपये, दूध से 1,50,000 रूपये तथा खरीफ फसलों में बाजरा से 50,000 रूपये, मूँगफली से 1,50,000 रूपये तथा ग्वार से 50,000 रूपये एवं रबी फसलों में गेहूँ से 1,00,000 रूपये, सरसों से 50,000 रूपये, चना से 50,000 रूपये, मेथी से 70,000 रूपये तथा जौ से 30,000 रूपये, इस प्रकार साल में कुल आय 11,00,000 रूपये की होती है जिससे आस–पास के गांवो के किसानों की तुलना में पैदावार को देखकर पूर्णतया संतुष्ट हूँ।

कृषि विभाग, राजस्थान के अधिकारियों द्वारा कृषक भ्रमण कार्यक्रम, कृषि साहित्य, कृषक उपयोगी योजनाओं की समय–समय पर जानकारी मिलती रही है।

हर वर्ष भूमि के जल–स्तर में होती कमी तथा बिजली की बचत करने के उद्देश्य से अब मेरा सौर ऊर्जा संयंत्र तथा ग्रीन हाऊस स्कीम के तहत शैड–नैट अपनाकर बूंद–बूंद सिंचाई से मौसमी सब्जियाँ लगाकर अच्छी आय प्राप्त करने का लक्ष्य है।

झाबर सिंह अहीर
पुत्र श्री बालूराम यादव
ढाणी अहिरान,
पोस्ट–प्रीतमपुरी,
तहसील–नीमकाथाना,
जिला–सीकर (राजस्थान)
मोबाइलः 09460836310

पृष्ठ 1 का शेष..... प्रदेश में मुख्यमंत्री ...

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने कहा कि राज्य सरकार ने किसानों एवं पशुपालकों की पीड़ा समझी है। उन्होंने कहा कि मूक पशु अपनी पीड़ा का इजहार नहीं कर सकता ऐसे मूक प्राणियों के लिए निःशुल्क दवा योजना पशुपालकों के वास्ते वरदान साबित होगी।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि कृषि राज्य मंत्री श्री विनोद कुमार लीलावाली ने कहा कि आज कृषि भूमि का बंटवारा होने से फसल उत्पादन कम होता जा रहा है तो ऐसे में पशुपालन को बढ़ावा देना जरूरी है।

इस अवसर पर पशुधन निःशुल्क दवा योजना के पोस्टर, मार्गदर्शिका एवं फोल्डर का विमोचन किया गया। राज्य पशुधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री बृजेन्द्र सिंह सूपा सहित अन्य अधिकारीगण भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

योजना के मुख्य बिन्दु

- राज्य की जनता को बेहतर पशु स्वास्थ्य सेवाओं के लिए सामान्य उपयोग में आने वाली आवश्यक दवाओं का निःशुल्क वितरण।
- धन की कमी के चलते पशु चिकित्सा सेवाओं से वंचित पशुपालकों के पशुओं का उपचार।
- निःशुल्क दवा वितरण से पशुओं का समय पर उपचार हो सकेगा, जिससे बीमारियों के कारण पशुओं की उत्पादकता क्षमता पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव में कमी आयेगी।

लाभार्थी

- पशु चिकित्सा संस्थाओं पर चिकित्सा हेतु बहिरंग (outdoor) एवं अन्तरंग (indoor) में लाये गये पशुओं का उपचार।
- विभागीय स्तर से आयोजित पशु चिकित्सालय पशुपालक के द्वार, पशु बांझपन निवारण व अन्य पशु चिकित्सा शिविरों में आने वाले पशु।
- रोग प्रकोप एवं आपातकालीन स्थिति में प्रभावित क्षेत्र में पशु रोग नियंत्रण।
- प्रशासन के स्तर से चिकित्सा हेतु निर्देशित पशु।

पशु दवा वितरण केन्द्र पर निःशुल्क दवाईयां मिलने में पशुपालक को किसी प्रकार की कठिनाई होने पर प्रभारी, पशु चिकित्सालय/सहायक निदेशक, पशुधन विकास /उपनिदेशक/संयुक्त निदेशक (क्षेत्र), पशुपालन विभाग से संपर्क किया जा सकता है।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	–	भवानी सिंह देथा
सम्पादक	–	भंवरा राम कड़वा
सह सम्पादक	–	पूनम चौधरी
परामर्श	–	शिवजी राम कटारिया
डिजाइनर	–	आर. मैसी